RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी का राष्ट्रीय स्वरूप

सिलक राम
सहायक प्रवक्ता दर्श मॉडल डिग्री कॉलेज गोहाना, सोनीपत

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March 2019

Keywords
राष्ट्रवाद, राजनीति, ऐतिहासिक, क्रांतिकारी।

ABSTRACT

नाटक साहित्य की वह विधा है जिसमें जीवन की अनुकृति को शब्दगत संकेतों में संकुचित कर, सजीव पात्रों द्वारा एक चलते–फिरते सप्राण रूप में अंकित किया जाता है। नाटक जीवन की सजीव प्रतिलिपि है। विष्णु प्रभाकर प्रमुख नाटककार तथा एकांकीकार हैं जो यथार्थ की भित्ति पर आदर्श की स्थापना करते हैं। विष्णु प्रभाकर की वह विशेषता है कि उन्होंने अपने नाटकों को मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित कर मानवता में अपना विश्वास प्रकट किया है और मनुष्य के कृत्रिम आवरण को हटाकर यथार्थ चित्रण का सफलतम प्रयत्न किया है। प्रस्तुत शोधपत्र में विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी के राष्ट्रीय स्वरूप का वर्णन किया गया है।

राजनीति समाज को सदैव प्रभावित करती आई हैं। कलाकर समाज का प्राणी होने के नाते अपने ही परिवेश से प्रभाव ग्रहण करता है। विष्णु प्रभाकर का युग राजनीति क्रान्ति का युग था। जिस समय उन्होंने साहित्य–सृजन आरम्भ किया, उस समय भारत परतंत्र था। देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने हेतु संघर्ष जारी था। इस काल में गांधी जी ने राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में नवीन राष्ट्रवादी सिद्धान्तों की स्थापना की थी। उन्होंने नारी को व्यावहारिक रूप में राष्ट्रीय रूप प्रदान किया और देश ने भी नारी के सहयोग की आवश्यकता को अनुभव किया। गांधी जी ने संस्थाओं तथा व्यावहारिक योजनाओं द्वारा नारी को जो राष्ट्रीय रूप प्रदान किया वही रूप विष्णु प्रभाकर के नाटकों में दृष्टिगत होता है।[1]

विष्णु प्रभाकर के नाटकीय पात्रों में राष्ट्रीयता एवं भारतीयता का सन्निवेश विशेष रूप से हुआ है। उनकी राष्ट्रीयता संकीर्णता की परीधि में आबद्ध नहीं है और सर्वत्र मानवता की भावना को विशेष महत्व देती है।

भारत की प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास के विचार–पटल पर उन्होंने अपने नारी पात्रों की सृष्टि की है। उनकी नारी राष्ट्रीय गौरव से पूर्ण, उदात्त भावनाओं से युक्त और पुरूष वर्ग की प्रेरणा के रूप से अवतरित हुई हैं उसमें अपने 'स्व' के प्रति पूर्ण सम्मान की भावना सन्निहित है। वह देश और जाति के कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग के महान भाव से पूर्ण व अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत है। वह न केवल गृहक्षेत्र में ही सफलतापूर्वक कार्य करने में सक्षम है अपितु आवश्यकता के समय वह अपने राष्ट्र के प्रति भी अपने कर्त्तव्य का भलि–भांति निर्वाह करने में समर्थ है।[2]

विष्णु प्रभाकर के ऐतिहासिक नाटकों में चित्रित नारी पात्र वीरांगनाएं हैं। उनमें राष्ट्रीयता संबंधी विशिष्ट गुण जैसे साहस, देश–जाति गौरव व देश पर आक्रमण करने वालों के प्रति प्रतिशोध की भावना इत्यादि कूट–कूअ कर भरे हैं। प्रस्तुत अध्याय में हम नारी के वीरांगना रूप व इन दिव्य गुणों पर चर्चा करेंगे।

''नारी केवल कोमलता की प्रतिमा हीं नहीं, वरन् शक्ति की स्रोतस्विनी भी है। जैसे जल की शीतलता में विधुत निवास करती है उसी प्रकार नारी में शक्ति।'' वीर नारी अपनी मातृभूमि या वंशमर्यादा के लिए अपने जीवन के सर्वस्व को भी न्यौछावर करने को तत्पर रहती है तथा अपने पति या प्रियतम को युद्ध में जाने की प्रेरणा देती है और आभूषण उतार कर शस्त्र ग्रहण कर युद्ध के मैदान में उतर जाती है।

विष्णु प्रभाकर के ऐतिहासिक नाटकों 'नव प्रभात', 'समाधि', तथा 'केरल का क्रान्तिकारी' में नारी के वीरत्व का चित्रण हुआ है।

'नव प्रभात' में कलिंग की राजकुमारी वरी नारी है। अशोक द्वारा कलिंग का नाश कर दिए जाने प रवह भिक्षुओं का वेश धारण कर सम्राट अशोक के समक्ष जाती है व उसे इस बात का बोध करवाती है कि वह कलिंग को जीत कर भी हार गया है।[3]

''.....सम्राट, तुम यदि यह समझते हो कि तुमने कलिंगवासियों का नाश किया है तो तुम भूल करते हो। तुमने उनका नहीं, अपना नाश किया है। पराजय उनकी नहीं, तुम्हारी हुई है।.....''

विष्णु प्रभाकर के नाटक 'समाधि' की नायिका बौद्ध भिक्षुणी आनन्दी भी वीरांगना है। वह आततायी हूणों की अधर्म तथा अन्याय पर टिकी समाज–व्यवस्था तथा हूण राजा मिहिरकुल के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए पुनः समाज में लौटती है। वह गुप्तवंश के सम्राट भानुगुप्त की संदेशवाहिका बनकर गांव–गांव में हूणों के अत्याचारों को बताती हुई जनता को उनके विरूद्ध भड़काती है। हूणों का नाश उसके जीवन का लक्ष्य है। वह स्वयं कहती है–

[1] मंजूलता तिवारी, मैथिली शरण गुप्त के काव्य में नारी।
[2] सावित्री : आधुनिक हिन्दी मुक्तककाव्य में नारी, पृ0 186
[3] विष्णु प्रभाकर : नवप्रभात, पृ0 71

RRIJM 2015, All Rights Reserved

''मैं वही करूंगी जिससे मेरा प्रतिशोध पूरा हो। जिससे हूणों का नाश हो।''

आनन्दी हूणों को अपनी मातृभूमि से निकालने के लिए साधना का जीवन त्याग कर शस्त्र धारण करती है।

''कहां पर शास्त्र ओर साधना का जीवन। कहां पर अनवरत संघर्ष युद्ध, कटार, और रक्त। रक्त, हाँ रक्त। मैं रक्त की प्यासी हूँ।''[4]

वह मात्र शस्त्र धारण कर ही संतुष्ट नहीं है अपितु वह सेना की लड़ाई का आरम्भ मानती है।

''हाँ, यह स्वाधीनता की लड़ाई आरम्भ है और हमने इसकी नींव में अपनी सबसे कीमती वस्तु रखी है।''

उपर्युक्त विवेचन में स्पष्ट है कि विष्णु प्रभाकर के इन ऐतिहासिक नाटकों की नारियां वीरांगनाएं हैं। वह अपनी माातृभूमि को अपने प्राणों की आहुति देकर भी स्वतंत्र रखना चाहती है। वह देशवासियों को भी स्वाधीनता का महत्व समझाती है तथा उन्हें स्वाधीनता संग्राम के लिए जागरूकता करती हैं।[5]

विष्णुप्रभाकर के ऐतिहासिक नाटकों के नारी पात्रों में सहास–शौर्य रूपी दिव्य गुण भी विद्यमान हैं। 'नव प्रभात' नाटक में कलिंग की राजकुमारी अपने देशवासियों की आहत आत्मा की प्रतिनिधि के रूप में सम्राट के समक्ष प्रस्तुत होने का निर्णय करती है। जब अशोक के सैनिक उसे रणभूमि में घायलों की सेवा करते देखते हैं और पकड़ने लगते हैं तो वह घबराती नहीं।

प्रतिहारी : ''देव ! जिस समय सैनिकों ने उसे देखा तो वह रणभूमि में घायलों की परिचर्या करती हुई घूम रही थी। जब उन्होंने उसे घेर लिया तो वह घबराई नहीं, हंसकर बोली– मुझे बंदी बनाओगे ? मैं तो स्वयं आ रही थी..... ।''

सम्राट के समक्ष प्रस्तुत किए जाने पर वह अपना साहस से सम्राट के पूछने पर कि तुम कौन हो, राजकुमारी उत्तर देती है–

''जो सम्राट देख रहे हैं, एक भिक्षुणी।''

जब सम्राट अशोक उसे सावधान करता है कि न तो वह कलिंग पराजित करने का प्रतिशोध उससे ले सकती है और न ही उसकी हत्या कर सकती है तो राजकुमारी सम्राट की तुलना एक बिल्ली से करती हुई कहती है–

''सम्राट ! हत्या करते–करते आप सिवाय हत्याओं के और कुछ नहीं सोच सकते। आप उस बिल्ली की तरह हैं जो स्वप्न में भी छिछड़े देखती है।''

इस तरह हम देखते हैं कि एक पराजित देश की राजकुमारी कितने साहस से सम्राट के समक्ष उपस्थित होती है, उसे चुनौतती देती है व उसे इस बात का बोध भी करवाती है कि उसने अत्याचार किया है। मरण तो संसार का नियम है, उसके लिए इतने प्रयत्न क्यों किए, वह जीत कर भी हार गया है।

'केरल का क्रान्तिकारी' की अम्मुकुट्टी भी साहसी नारी है। वह भी जन–जन में स्वाधीनता का अलख जगाने के लिए घूमती है। उसके अनुसार स्वतंत्र होने की इच्छा शक्ति प्रबल रखनी चाहिए, तोप, गोले, हथियार यह सब गौण हैं।

''.....मैं कहती हूँ कि घर के अन्दर बैठकर मरने से वह बेहतर है कि हम भी पुरूषों की तरह कष्टों का सामना करें और तब यदि मौत आए तो हंसते–हंसते उसे गले से लगा लें।''[6]

पुलिस जब उन्हें गिरफ्तार करने आती है तो वह साहस से कहती है –

''ओह ! पुलिस है। वह हमें गिरफ्तार करने आई है। बड़ी खुशी से कर ले। हम अपने पथ से विचलित नहीं होंगी।''

साजैष्ट जब उन्हें यह कहता है कि आप स्त्रियां। है। आपको घर रहना चाहिए तो शारदा बिना घबराहट के उसे नारी के शक्ति रूप में परिचित कराती कहती है–

''आपकी सलाह के लिए धन्यवाद। लेकिन हम–सब समझ गई हैं कि वह सलाह गलत है। स्त्रियां घरों में रहने के लिए नहीं होती। वे दिन अब लद गए। क्या तुम नहीं जानते कि आदि शक्ति महाचण्डी, महामाया, महाकाली वे सभी स्त्रियां थी। इन्होंने ही अन7ाचारी दानवों को मारकर सृष्टि की रक्षा की थी। इसलिए हम अब घर पर नहीं जाएंगी। विदेशी कपड़ों की होली जलाकर दासता रूपी दानव का संहार करंगी।''

विमल भी शारदा के साहस की प्रशंसा करता कहता है–

''मैं तुम्हारे साहस की प्रशंसा करता हूँ शारदा ! तुम जैसी नारियों पर ही देश की स्वतंत्रता निर्भर करती है..... ''[7]

'समाधि ' नाटक की मालवी शत्रुपक्ष के राजमहल में जाकर, उनके रहस्यों को जानकर तथा वहां हूणों के विरूद्ध वातावरण की सृष्टि कर अपने साहस परिचय देती है।

''मैं मधुबाला बन कर राजमहल में गई और वहां हूणों के विरूद्ध जितना वातावरण बना सकती थी बनाया।''[8]

[4] विष्णु प्रभाकर : समाधि, पृ0 150
[5] वहीं, पृ0 141
[6] वहीं, पृ0 98
[7] वहीं, पृ0 67
[8] विष्णु प्रभाकर : युगे–युगे क्रान्ति, पृ0 42

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विष्णुप्रभाकर के ऐतिहासिक नाटकों की नारियां वीरांगनाएं व साहसी तो हैं ही साथ ही राजनीति की भी इच्छा ज्ञाता हैं। कहीं–कहीं तो वे अपने राजाओं को भी राजनीति के दाव पेंच सिखाती दिखाई देती हैं। आशा रानी व्होरा ने भारतीय नारी की राजनीति संबंधी सूझ–बूझ के विषय में लिखा भी है–

''बेशक राजनीति–कूटनीति में चाणक्य जैसा कोई महिला नाम नहीं उभरा पर सीधे शासन हो या शासन मंत्रणा, भारतीय नारी की सूझबूझ और कुशल प्रशासन क्षमता से प्रशंसित प्रमाण यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं।''[9]

'नवप्रभात' नाटक में सम्राट अशोक की पत्नी कारूवाकी भी राजनीति की अच्छी ज्ञाता है। जब उसे यह पता चलता है कि जिस भिक्षुणी को बंदी बनाया गया है वह युद्धभूमि में घायलों की परिचर्या करती घूम रही थी व सैनिकों के घेर लिए जाने पर घबराई नही ंतो कारूवाकी को संदेह हो जाता है कि वह कोई साधारण नारी नहीं है और वह सम्राट को भी इस विषय में बताती हैं–

''सम्राट, उस रहस्यमय भिक्षुणी का असमय में इस प्रकार रण–भूमि में घूमना साधारण बात नहीं है। वह अवश्य कलिंग के राजकुल या राजतंत्र से संबंध रखती है।''[10]

कारूवाकी अशोक को भिक्षुओं से सावधान रहने को कहती है क्योकि वह भांप जाती है कि उनके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही है।

''महाराज ! सावधान रहें। ऊपर जो शांति दिखाई देती है उसके नीचे ज्वालामुखी धधक रहा है।''[11]

'केरल का क्रान्तिकारी' की अम्मुकुट्टी अपने प्राणों की परवाह न करते हुए वेलुत्तम्पी को महाराज तक पहुंचाने का प्रयत्न करती है। वह अपने गुप्तचरों से मिलकर बड़ी चतुरता व सूझबूझ से फिरंगियों को गुमराह करती है।

''वह मुझ पर छोड़ दो। मेरे विश्वासपात्र आदमी उनकी खबर रख रहे हैं। फिरंगियों के गुप्तचरों को गुमराह करेंगे।''[12]

वेलुत्तम्पी की धाय माँ भी राजनीति के दांव–पेंच जानती है तथा वेलुत्तम्पी से मिलकर विद्रोह की योजना बनाती है।[13]

''प्रयत्न नहीं, जाल बिछाना होगा। कालीकट में, कोच्ची में।

वह बौद्ध विहारों के पुनर्निर्माण के लिए व उस महानाश का प्रतिशोध लेने के लिए शस्त्र उठाती है।

इस तरह हम देखते हैं कि विष्णु प्रभाकर ने भारतीय इतिहास की क्रोड़ में नारी के इस राष्ट्रीय स्वरूप का उद्घाटन कर राष्ट्रीय आंदोलन को साहित्यिक प्रेरणा दी और समयानुकूल नारी के इस नवीन स्वरूप को प्रतिष्ठा प्रदान करते हुए उसे गौरव भी प्रदान किया। इस प्रकार राजनीतिक क्षेत्र में नारी को सम्मान पूर्ण स्थान देते हुए विष्णु प्रभाकर ने उसे घर की सीमाओं से बाहर लाकर उसकी शक्ति और साहस का सही मूल्यांकन किया है।

[9] विष्णु प्रभाकर : नवप्रभात, पृ0 62
[10] आशा रानी व्होरा : भारतीय नारी : दशा और दिशा, पृ0 26
[11] वही, पृ0 64
[12] वहीं, पृ0 70
[13] विष्णु प्रभाकर : केरल का क्रान्तिकारी, पृ0 69

RRIJM 2015, All Rights Reserved